International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 117-120

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 117-120
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-04-2023
Accepted: 17-05-2023

रानी सोनी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया
विश्वविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
रानी सोनी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया
विश्वविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

प्रमुख पुराणों में राजधर्म एवं सुशासन

रानी सोनी

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति मे सम्पूर्ण स्वरूप की जानकारी के पुराण के अध्ययन की महत्ती आवश्यक है। पुराण भारतीय साहित्य के मेरूदण्ड है। वेदार्थ का उपबृहण करने वाले पुराण ग्रंथ वेद के पूरक हे। सरल सुबोध एवं आख्यानमय शैली में धर्म के गूढ तत्वों का जनमानस तक संप्रेषण करने में पुराण सर्वथा अनुपमेय है। यास्क के निरूक्त के अनुसार)3/19) पुराणों की व्युत्पति 'पुरा नवं भवति' अर्थात् जो प्राचीन होकर भी नया होता है। वायु पुराण के अनुसार- 'पुरा अनति' अर्थात् प्राचीनकाल में जो जीवित था। पद्मपुराण के अनुसार पुराण की व्युत्पत्ति इस प्रकार है -

पुरा परम्परां वष्टि तेन तत् स्मृतम्।।[1]

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार" -पुरा एतत् अभूत"[2] अर्थात् प्राचीन काल में ऐसा हुआ। पुराणों में विभिन्न विषयों जैसे धार्मिक, राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक, नैतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक आदि विषयों का विस्तृत वर्णन किया है। वस्तुतः महर्षि वेदव्यास ने त्रिकालदर्शी होने के कारण राजवंशो राजव्यवस्था और राजधर्म पर सारभूत तत्वों को एकत्र कर राजवंशों की रचना की। पुराण के साथ पंचलक्षण का सम्बन्ध प्राचीन है -

सर्गश्च प्रतिसंर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंश्यानुचरितं चेति पुराण पञ्चलक्षणम्।।[3]

जगत के व्यवहार शासन प्रंबध, आर्थिक व्यवस्था की समुन्नति के लिए ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्या को सभी पुराणों में अत्यधिक महत्व दिया है,

क्योंकि विद्याओं के द्वारा मनुष्य के जगत् के वास्तविक व्यवहार का ज्ञान होता है। ये चार विद्याएँ इस प्रकार है -

1. अन्वीक्षिकी
2. त्रयी
3. वार्ता
4. दण्डनीति

अन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिवस्तथैव च।[4]

1. सांख्य दर्शन, योग दर्शन और चार्वाक दर्शन का ज्ञान कराने वाली विद्या को अन्वीक्षिकी कहते हे।
2. धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य को बताने वाली विद्या को त्रयी कहते है। यद्यपि वेद चार है, किन्तु अर्थवेद को भौतिकवादी होने से त्रयी में नहीं गिना गया है।
3. कृषि, गौरक्षा एवं वाणिज्य संबंधी उपायों को बताने वाली विद्या को वार्ता कहते है।
4. न्याय और अन्याय को एवं सन्धि, विग्रह आदि राजनीति के छहः गुणों को बताने वाली राजव्यवस्था को चलाने वाली विद्या को दण्डनीति कहते है।

विद्याओं को सार होने से राजा कभी भी दुव्यर्सनों में नहीं पड़ता है। पुराणों में राजनीति, वैदिक काल के पश्चात् पौराणिक काल को भारतीय समाज का सर्वतोमुखी विकसित काल माना जाता है। पौराणिक काल में राज्य का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व सामने आया था क्योंकि इस काल में अनेक राज्य और राज्यों के नाम पुराणों में स्पष्ट मिलते है। पौराणिक राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ एवं परिष्कृत थी। इस काल में राज्य का अपना अलग, अस्तित्व तो था, किन्तु इसमें अनके विभाजन हो गए थे।

अनके राजा अलग-अलग राज्य करते थे एवं परस्पर स्पर्धा की भावना राज्य विस्तार के लिए होने लगी थी। पौराणिक काल में सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो चुका था और सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति के आधार पर कार्य होने लगे थे।

पौराणिक काल में राजवंशो में राज्य प्राप्ति के लिए राजधर्म में विभिन्न प्रकार के विकास होने लगे थे। सैनिको का विकास, राजदूत एवं गुप्तचरों की व्यवस्था, दुर्ग व्यवस्था, राज्य विस्तार के द्योतक थे। आग्निपुराण एवं मत्स्य पुराणा मे राज्य की शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए सप्तांगों का विशेष महत्त्व है।

स्वाम्यमात्यो जनपदा दुर्गो दण्डस्तथेव च।
कोषो मित्रं च धर्मज्ञ सप्ताङ्गै राज्यमुचयते।[5]

अर्थात् राज्य की प्रमुख सात अंग है -

1. राजा 2. मंत्री 3. जनपद
4. दुर्ग 5. दण्ड 6. कोश
7. मित्र

1. राजा

पुराणों में समाज व्यवस्था की स्थापना एवं रक्षण करने के लिए राजा की आवश्यकता एवं महत्त्व का प्रतिपादन करते हुये इसे मानव कल्याण के लिए अनिवार्य का प्रतिपादन करते हुये इसे मानव कल्याण के लिए अनिवार्य माना है। पुराणों में राजा अथवा राज्य की आवश्यकता एवं महत्त्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। बिना राजा के राज्य का अतः पतन होना निश्चित है। इस प्रकार अराजकता की स्थिति को रोकने के लिए राजा को अनिवार्य बताया गया है। राजा के सभी कर्तव्यों में प्रजारक्षण सर्वप्रमुख था। प्रजा की रक्षा के लिए राजा को दुष्टों का दमन तथा युद्ध करना पडता था।

वर्णाश्रम धर्म का पालन भी राजाओं का कर्तव्य बतलाया गया है। भागवत का कहना है कि वर्णाश्रम धर्म का पालन करने तथा प्रजा को वर्णाश्रम में स्थित रखने से राजा का कल्याण होता है तथा देवता उस पर प्रसन्न रहते है।[6] अग्नि पुराण के अनुसार राजा के सदैव ऐसे होना चाहिए जैसे गर्भिणी एवं सहधर्मणि होती है। वह अपने सुख का

त्याग करके गर्भ के सुख की ही सदा ध्यान रखती है।

नित्यं राज्ञा तथा भाव्यं गर्भिणी सहधर्मिणी।
यथा स्वमुखमुत्सृज्य गर्भस्य सुखमावहेत।।[7]

2. मंत्री

मंत्रीगण राजा का एक अभिन्न अंग था।
अग्निपुराण में मंत्री के बारे कहा गया है कि -

कुलीनाः शुचयः शूरा श्रुतवन्तोऽनुरागिणः।
दण्डनीतेः प्रयोक्तारः सचिवा स्यु महीपते।[8]

अर्थात् कुलीन पवित्र, पराक्रमी, शास्त्रो को ज्ञाता, अनुराग रखने वाला, दण्डनीति का प्रयोग करने वाले ऐसे व्यक्ति को मंत्री होना चाहिए। राजतंत्र में अमात्य की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। मंत्री को राज्य का स्तम्भ माना गया है। प्रारम्भिक पुराणों के अनुसार राज्य का विधि पूर्वक संचालित करने के लिए मन्त्रियों से मन्त्रणा करना आवश्यक है।

3. जनपद

इसका शाब्दिक अर्थ जन के रहने के स्थान से है। मत्स्य पुराण का कहना है कि राजा को उस प्रदेश में निवास करना चाहिए जहां प्रचुर मात्रा में घास तथा ईधन हो, रमणीय हो, सामन्तगण विनम्र भाव से एकत्र रहते हो, वैश्य तथा शूद्र जन भी हो वहाँ कुछ ब्राह्मण भी निवास करते हो, कार्य करने वाले लोग अधिक संख्या में मिले जहां के निवासी कर के मार से पीड़ित न हो, तथा पुष्प व फल प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध हो और शत्रु की सेना जहां न पहुंच सके।[9]

4. दुर्ग: पौराणिक काल में दुर्ग का अत्यधिक महत्त्व था। मत्स्य पुराणा में छह प्रकार के दुर्ग माने गऐ है -

1. धनदुर्ग 2. महीदुर्ग 3. नृदुर्ग
4. जलदुर्ग 5. गिरिदुर्ग 6. वन दुर्ग

इन सबसे मे सर्वश्रेष्ठ दुर्ग गिरी दुर्ग को माना गया है। इनमें से अपनी परिस्थिति के अनुसार किसी एक प्रकार का दुर्ग बनाकर उनमें रक्षा की समग्र सामग्री एकत्रित करनी चाहिए।[10]
दुर्ग के अन्तदर नगर पूर्ण रूपेण वास्तुशास्त्र के नियमानुसार तथा शिल्पियों के निवास के लिए भी निश्चित दिशा आवास बनाये जाते थ। नगर को कई भागों में बांटा जाता था, जहां राजा, मंत्री, राज्य के उच्च अधिकारी, अस्तबल, हाथियों के रहने के स्थान आदि निश्चित जगह पर बनाये जाते थे।[11]

5. कोश

कौटिल्य का मत है कि राज्य के सारे व्यापार कोश पर निर्भर रहते है। अतः राजा को सर्वप्रथम कोश पर ध्यान देना चाहिए।[12] राज्य का कोष मुख्य आधार होता था। राज्य की रक्षा के लिए सेना की आवश्यकता थी तथा सेना कोश पर आधारित थी क्योंकि कोश के बिना न तो सेना रखी जा सकती थी न ही उनकी आजीविका चलाई जा सकती थी।
कोश के बिना राज्य की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है, जिससे मित्र भी शत्रु बनने लगते है तथा राज्य का पतलन सुनिश्चित हो जाता है। कोश में अर्जित धन धर्मपूर्वक इकट्ठा होना चाहिए। कोश पर ही राष्ट्र का समस्त दायित्व होता है।

6. दण्ड

पौराणिक काल में प्रजाहितैषी राजाओं के पास राज्य में प्रजा किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करती थी, क्योंकि कि सच्चे शासको को दण्डनीति से दुष्टजन सदैव भयभीत रखते थे।
मत्स्य पुराण में कहा गया है कि राज्य में राजा और दण्ड की व्यवस्था न रखी जाय तो समाज में मत्स्य न्याय फैल जायेगा, अर्थात् जिस प्रकार बडी

मछलियां छोटी मछलियों को खा जाती है, उसी प्रकार दण्ड व्यवस्था के न रहने पर बलवान लोग असहायों को चुस डालेगे।[13]

भागवत में कहा गया है कि जिस राजा की सेना उसके वश में रहती है, व राजा अपने राज्य के सारे सुखों को भोग सकता है।[14] इस प्रकार इन सप्तागों का पुराणों की राजनीति में विशेष महत्त्व था।

7. मित्र

कोई भी राज्य बिना राजनीतिक गठबंधन को बिना स्थिर नहीं रह सकता है। देश में शक्ति संतुलन बनाये रखने के लिए अन्य राजाओं से मैत्री स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक था।

भागवत में पाण्डवों के शासन काल में राजा युधिष्ठिर अपनी प्रजा को प्रसन्न रखते हुए पिता के समान उनका पालन करने लगे।

अपालयतः धर्मराजः पितृवद् रंजयन् प्रजा।[15]

इन्हीं की तरह राजा पृथु, मनु, भृगु आदि अनके कुशल राजा का वर्णन है, जिनके कारण पौराणिक राजनीति चरमोत्कर्ष पर थी। राजनीति विषयक वर्णन मत्स्य, अग्नि तथा गरूड पुराण के अतिरिक्त मार्कण्डेय पुराण तथा विष्णु धर्मोत्तर जैसे उपपुराणों में भी प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार पुराण साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि पौराणिक काल में राजनीति एवं प्रशासन अत्यन्त उन्नत अवस्था में था। राजा प्रजा की रक्षा करता था। श्रेष्ठ एवं प्रजा हितैषी राजा के नेतृत्व मे राज्य बहुमुखी विकास की ओर अग्रसित था।

संदर्भ सूची

1. पद्मपुराण 5/2/53
2. ब्रह्मण्डपुराण 1/2/173
3. विष्णुपुराण 3/6/24, भविष्य पु. 2/5, मत्स्यपुराण 53/64
4. भागवतपुराण पु. 12/7/16
5. अग्निपुराण राजधर्म 88/11
6. भागवतपुराण 4/14/18-19
7. अग्निपुराण 87/8
8. वही 95/12
9. मत्स्यपुराण 225/9-10
10. अग्निपुराण 3/29
11. मत्स्यपुराण 217/9
12. अर्थ 2/8
13. मत्स्यपुराण 225/9-10
14. भागवतपुराण 6/14/17
15. वही 1/12/14